ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

# आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 94 अंक : 8
पौष, कृष्ण पक्ष द्वादशी
विक्रम संवत् 2076
कलि संवत् 5120
21 जनवरी से 5 फरवरी 2020
दयानन्दाब्द : 195
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,120
मुख्य सम्पादक :
श्री देवेन्द्र कुमार : 9352547258
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आचार्य रविशंकर आर्य, बयाना
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री अशोक कुमार शर्मा, मोतीकटला
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
श्री देवेन्द्र कुमार सम्पादक, आर्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018
मुद्रक :– वी. के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा, जयपुर
ग्राफिक्स : वी. के. प्रिन्टर्स जयपुर।
ई–मेल :
aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

## भरतपुर सम्भागीय आर्यवीर दल शिविर का भव्य समापन

आर्यवीर दल राजस्थान के त्वावधान में भरतपुर संभाग का सप्तदिवसीय आदर्श युवा निर्माण शिविर दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2019 तक हिण्डौन सिटी (करौली) में सम्पन्न हुआ। शिविर में भरतपुर संभाग के सभी जिले धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर व भरतपुर से 70 आर्यवीरों ने भाग लिया। यह शिविर भरतपुर संभाग की सभी आर्य समाजों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

सप्तदिवसीय शिविर में आर्यवीरों को आत्मोन्नति के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उप प्रधान एवं आर्यवीर दल के प्रान्तीय सहसंचालक आचार्य रविशंकर आर्य ने आर्यवीरों को प्रतिदिन प्रातः व सायं ध्यान–उपासना पद्धति को बताया तथा अभ्यास कराया। इसके साथ अध्यात्म व व्यवहार के विभिन्न विषयों पर प्रवचन किया।

आर्यवीर दल के प्रान्तीय सहमंत्री श्री अंकुश आर्य ने आर्यवीरों को स्वास्थ्य रक्षा के लिए आसन व प्राणायामों का अभ्यास कराया तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न जानकारियाँ दीं। शिविर में आर्यवीरों को आत्मरक्षा हेतु प्रान्त के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री भागचन्द आर्य तथा उनके सहयोगी शिक्षकों श्री विद्यासागर आर्य, श्री शुभम् आर्य, श्री विष्णु आर्य, श्री हेमराज आर्य ने नियुद्धम्, कराटे, लाठी, जिम्नास्टिक आदि कलाओं का अभ्यास कराया।

शिविर में आर्यवीरों की प्रतिभा वर्धन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से रचनात्मक



योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

कार्यक्रम किये गये । इन कार्यक्रमों में प्रतिभा खोज प्रतियोगिता, वैदिक ज्ञान क्रिकेट मेच प्रतियोगिता, महापुरुष चित्र पहचान, महापुरुष नाम स्मृति परीक्षण, सत्य की खोज व स्वामी श्रद्धानन्द चलचित्र धारावाहिकों पर आधारित लिखित प्रश्न पत्र इत्यादि प्रतियोगिताएँ कराई गई।

शिविर में आर्यवीरों द्वारा शहर के मुख्य मार्गों से मोहननगर आर्य समाज तक शोभायात्रा निकाला गया। शोभायात्रा के दौरान आर्यवीरों ने लाठी व नियुद्धम् के हाथ दिखाकर शक्ति प्रदर्शन किया तथा वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द की जय के नारे लगाए। आर्यवीर दल के प्रान्तीय संचालक श्री भवदेव जी शास्त्री ने आर्यवीरों का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया तथा उन्हें दुर्व्यसनों से दूर रहने का संकल्प दिलवाया। शिविर में उपस्थित आर्यवीर दल के महामंत्री श्री गगेन्द्र जी शास्त्री ने भी आर्यवीरों को मार्गदर्शन किया। आर्यवीर दल राजस्थान के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री भागचन्द जी आर्य का 32 वां जन्मदिवस वैदिक पद्धति से मनाया गया। यज्ञ के उपरान्त ओ३म् की आकृति में जमाए हुए दीपकों को प्रज्ज्वलित किया गया और गायत्री मंत्र व अन्य वेद मंत्रों से मंगलगान कर उपस्थित सभी वरिष्ठों द्वारा शुभाशीष तथा आर्यवीरों द्वारा शुभकामनाएँ दी गई।

शिविर का समापन कार्यक्रम 31 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। समापन कार्यक्रम में आर्यवीरों ने व्यायाम, गीत, भजनों की प्रस्तुति दी। समापन समारोह के दौरान आर्यवीर दल के भामाशाह संरक्षकों का सम्मान भी किया गया। भामाशाह संरक्षकों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (सवाईमाधोपुर), डॉ. वेद प्रकाश (बयाना), श्री मदनमोहन जी आर्य (गंगापुर सिटी), श्री सरस्वती प्रसाद जी गोयल के पुत्र श्री ब्रह्मदेव जी आर्य (सवाईमाधोपुर), श्री शान्तिस्वरुप जी आर्य (हिण्डौन सिटी), आर्य समाज तलवण्डी (कोटा) का सम्मान आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा किया गया। श्री शान्तिस्वरुप जी आर्य को समापन समारोह का अध्यक्ष बनाया गया।

समापन कार्यक्रम में शहर आर्य समाज, हिण्डौन सिटी के पदाधिकारियों द्वारा शहर आर्य समाज भवन को आर्यवीर दल भरतपुर संभाग का प्रधान कार्यालय बनाए जाने की घोषणा की तथा साथ ही आर्य समाज के उपप्रधान श्री अशोक जी आर्य ने आर्यवीर दल राजस्थान की प्रांतीय कार्यकारिणी तथा उपस्थित सभी आर्य समाजों से पधारे आर्यजनों की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यालय का उद्घाटन किया गया। भामाशाह सम्मान व समापन कार्यक्रम का मंच संचालन आचार्य रविशंकर जी आर्य एवं श्री अंकुश आर्य ने किया। इस कार्यक्रम में शिविर संचालन में विशेष सहयोग हेतु हरिप्रसाद जी आर्य का उनके परिवार सहित आर्यवीर दल, राजस्थान द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में ध्वजातरंग कर संभाग के संचालक श्री नरेन्द्र जी आर्य ने ध्वज प्रान्तीय संचालक को सौंपा तथा शिविर समापन की घोषणा की। शिविर संयोजक श्री अंकुश आर्य ने इस शिविर के सफल संचालन हेतु हिण्डौन सिटी के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं व आर्यजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

**अंकुश आर्य**
**प्रान्तीय सहमंत्री, आर्यवीर दल राजस्थान**

## कोटा में तीन दिवसीय आवासीय, व्यक्तित्व विकास एवं वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

## कोटा में तीन दिवसीय आवासीय, व्यक्तित्व विकास एवं वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न

कोटा की समस्त आर्यसमजों द्वारा दिनांक 27, 28 तथा 29 दिसंबर 2019 को रथकांकरा, रावतभाटा रोड स्थित शिवज्योति आवासीय विद्यालय में तीन दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व विकास एवं वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ ।

शिविर संयोजक आर्यसमाज कुन्हाड़ी कोटा के प्रधान पी सी मित्तल ने अवगत कराया कि उपर्युक्त शिविर में कोटा की समस्त 8 आर्यसमजों के अतिरिक्त बूंदी, रावतभाटा, दिल्ली, हरियाणा, बहरोड़ आदि के 93 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

आवासीय शिविर में गांधीधाम गुजरात से आचार्य चंद्रेश जी व सोनीपत हरियाणा के आचार्य संदीप जी एवं कोटा के पी सी मित्तल जी ने तीन दिनों तक शिविरार्थियों को ईश्वर की ध्यान उपासना, योग, व्यायाम, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ (अग्निहोत्र), नैतिक शिक्षा, ज्ञान कर्म–उपासना, कर्मफल सिद्धांत, ईश्वर की पूजा का वैदिक स्वरूप, संस्कार एवं सदाचार का मानव जीवन मे महत्व,पंचमहायज्ञों का लाभ एवं सफल गृहस्थ के बारे में अपने अमूल्य वैदिक ज्ञान की वर्षा की। दीक्षांत समारोह में शिविरार्थियों ने अपनी बहुत सारी बुराइयों को छोड़ने व अच्छाइयों को ग्रहण करने का संकल्प लिया, जिनमें पंचमहायज्ञो को दैनिक जीवन में उतारने का संकल्प प्रमुख था।

दीक्षांत समारोह में शिविरार्थियों ने अपने अनुभव बताये। शिविर को प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रचार प्रसार का कार्य श्री अर्जुनदेव जी चड्ढा ने बहुत ही लगन से किया।

सभी शिरार्थियों का एक सामूहिक फोटोशूट करवाया गया। शिविर की व्यवस्थाओं से सभी अत्यंत प्रसन्न थे। शिविर का अवलोकन करने हेतु 28 दिसम्बर को प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री देवेंद्र शास्त्री, कोषाध्यक्ष संदीपन आर्य एवं नरदेव आर्य उपप्रधान अपनी पूरी टीम के साथ शिविर में उपस्थित हुए। शिविर संयोजक पी सी मित्तल के अथक प्रयासों व साहस से कोटा के इतिहास में यह पहला अभूतपूर्व आयोजन हुआ इसके लिये कोटा, बूंदी व रावतभाटा की समस्त आर्यसमजो द्वारा पी सी मित्तल जी का सम्मान किया गया।

अन्त में शिविर संयोजक श्री मित्तल ने सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद दिया।

**–पी. सी. मित्तल**
**प्रधान, आर्य समाज, कुन्हाड़ी, कोटा**

## आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अन्तर्गत
## वैदिक उपदेशक, भजनोपदेशक एवं वैदिक पुरोहित परिचय सूची का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने राजस्थान के समस्त वैदिक उपदेशकों, भजनोपदेशक एवं वैदिक पुरोहित परिचय सूची बनाने का निर्णय लिया है। इस सूची में आर्य जगत के समस्त उपदेशक, भजनोपदेशक एवं वैदिक पुरोहित महानुभाव के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो किया जाना सुनिश्चित किया है।

अतः समस्त उपदेशक, भजनोपदेशक एवं पुरोहित महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता, प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें सूची में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर 302004 के पते पर प्रेषित करें तथा सभा की मेल आई. डी. पर भी भेज सकते हैं।

## श्री रतिराम जी आर्य

वैदिक धर्म के अनन्य उपासक, आर्य समाज के दिवाने और ऋषि दयानन्द के परम भक्त निष्काम कर्म योगी आर्य रत्न पंडित रतिराम शर्मा ने सोमवार 30 दिसम्बर 2019 को अपनी भीष्म प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन करते हुए, अपने निवास पर परिजनों के हाथों में, इस नश्वर संसार को सर्वदा के लिए त्याग कर अपने ओ३म् पिता का सामीप्य प्राप्त कर लिया।

20 जुलाई 1928 को हरियाणा के देवराला ग्राम में पंडित गौरी दत्त शर्मा के एक मात्र पुत्र के रूप में उन्होंने इस संसार को प्राप्त किया। एक मात्र पुत्र के मोह के वशीभूत माता पिता ने इनको ग्राम की शिक्षा तक सीमित रखा। उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए परन्तु बड़े भाई सदृश देवराला ग्राम निवासी श्री गोविन्दराम आर्य जी के सानिद्ध्य में सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमर ग्रन्थ से परिचित हो कर आर्य समाज को समर्पित हो गए। पिता की शिक्षा हमेशा श्रेष्ठ जनों की संगत करना जीवन पर्यंत इसका पालन करते रहे और अपने ज्ञान को समृद्ध कर आजीवन सत्य विद्या के प्रचार प्रसार लगे रहे, न सिर्फ अपनी संतानों को उच्च शिक्षित किया बल्कि समाज के अनेक लोगों को विद्या अर्जन में सहायता की। आपके सुयोग्य पुत्र श्री विजय शर्मा प्रधान आर्य समाज भीलवाड़ा आर्य जगत में वैदिक सिद्धातों, महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना योग दान दे रहे हैं।

श्री रतिराम शर्मा ने 92 वर्ष की आयु को प्राप्त किया उसमें लगभग आधी उम्र उपरोक्त संकल्प को पूरा करने में लगे रहे। सिलीगुड़ी नगर ही नहीं अपितु पूरे उत्तर बंगाल और नेपाल में आर्य समाज और समाज सेवा के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है। सिलीगुड़ी में आर्य समाज, ऋषि भवन, डी.ए.वी. स्कूल और वैदिक विद्या प्रतिष्ठान समेत अनेक संस्थाओं के निर्माण के मुख्य शिल्पकार रहे। आज अपने पीछे एक विशाल समृद्ध परिवार संस्कारित कर के गए ताकि वे भी उनकी प्रेरणा से उनके दिखाए पथ पर उनका अनुसरण करते रहें।

श्री रतिराम शर्मा ने वेद पढ़े, वेदों का प्रचार प्रसार किया और मृत्यु पर्यंत वेदानुकुल जीवन जी कर उदाहरण बन कर दिखाया। जिसकी हो सच्ची लगन, जिसका हो सच्चा प्रण, वो कैसे न उतरे पार। यह उनके जीवन का ब्रह्म वाक्य था और यही उनकी सफलता का सूत्र था .....

**कल्याण मार्ग का पथिक तनिक लेता ना कभी विराम था।**
**संकल्पों का धनी प्रभु का भक्त आर्य रतिराम था।।**

### : शोक समाचार :

परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्रीमान् सुभाष जी नवाल की बड़ी पुत्रवधू श्रीमती श्रुति नवाल के असामयिक निधन पर आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान अपनी संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से शोकाकुल परिवार को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति हेतु कामना करता है।

## सभा अधिकारियों का संगठन एवं प्रचार भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का एक प्रतिनिधि मंडल ने कोटा, रावतभाटा, बांसवाड़ा प्रतापगढ़, कुशलगढ़, बारां और छबड़ा का सघन दौरा किया। दिनांक 27 दिसम्बर 2019 को सायं 4:30 बजे प्रतिनिधि मंडल जयपुर से रवाना होकर रात 9:30 पर कोटा पहुँचा। कोटा में प्रचार प्रभारी श्री अर्जुन देव जी चडढा से मिलकर वहीं रात्रि विश्राम किया। इस बीच आर्य समाज की प्रगति हेतु विषयों पर विचार विमर्श किया। प्रतिनिधि मंडल का मुख्य उद्देश्य छबड़ा के श्री डॉ. रमेश चन्द्र जी गुप्ता से मुलाकात करना था। श्री रमेश चन्द्र जी मूलतः बांरा जिले के छबड़ा के रहने वाले हैं जो अब अमेरिका में रहते हैं। वे कोटा आये हुये थे। उनसे मुलाकात डॉ. वेदप्रकाश जी गुप्ता के (कृष्णा रोटरी ब्लड बैंक) निवास पर हुई। प्रतिनिधि मंडल ने आर्य प्रतिनिधि सभा की गतिविधियों की विस्तार से चर्चा की। मंत्री महोदय ने वेद प्रचार की महती आवश्यकता बताई, पर वेद प्रचार के लिए साधन की कमी का भी जिक्र कर डॉ. रमेश चन्द्र जी गुप्ता से इस हेतु प्रचार के लिए उपलब्ध कराने का निवेदन किया। डॉ. रमेश जी ने इस हेतु यथा संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया, साथ ही उन्होने बारां जिले में छबड़ा आने का निमन्त्रण दिया। 30 दिसम्बर 2019 को प्रतिनिधि मंडल छबड़ा पहुँचा। वहाँ श्री रमेश जी नये आर्य समाज भवन का निर्माण करवा रहे हैं। संपूर्ण भवन का अवलोकन करवाया तथा अपने पिता की स्मृति में बालिका आदर्श विद्या मन्दिर में 36 लाख के नये भवन का निर्माण कर समर्पित किये गये भवन का भी अवलोकन करवाया। उन्होनें प्रतिनिधि मंडल का छबड़ा आने पर स्वागत, आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया तथा मार्च माह में आर्य समाज भवन के उद्घाटन के अवसर पर प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि मंडल को निमंत्रण भी दिया। प्रतिनिधि मंडल श्री सुखलाल जी के पुत्र के यहाँ पर चायपान व मुलाकात के बाद छबड़ा से जयपुर के लिए प्रस्थान कर गया।

उससे पूर्व जयपुर से कोटा पहुँचते श्री रमेश जी से मुलाकात के बाद प्रतिनिधि मंलड रावतभाटा को प्रस्थान कर गया। रावतभाटा दिन के 3 बजे पहुँचे, वहाँ आर्य समाज रावतभाटा में विश्राम तथा रावतभाटा का भ्रमण किया। तत्पश्चात् रात्रि 12 बजे प्रतिनिधि मंडल बांसवाड़ा के लिए प्रस्थान कर गया। बांसवाड़ा प्रातः 5:00 बजे दयानन्द सेवा सदन पहुँचें, वहाँ सेवा सदन के संचालक श्री जीववर्धन शास्त्री ने प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया। नित्यकर्म से निवृत्त होकर जीववर्धन जी से सेवासदन की गतिविधियों की जानकारी ली तथा विचार विमर्श किया तत्पश्चात् प्रतिनिधि मंडल कुशलगढ़ दयानन्द सेवा सदन पहुँचा। वहाँ नये भवन के निर्माण कार्य देखा तथा सेवा सदन की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। दयानन्द सेवा सदन की गतिविधियों पर चर्चा के साथ ही एक लघु बैठक का भी आयोजन किया गया जिसमें सभी का परिचय करवाया गया। कुशलगढ़ दयानन्द सेवा सदन के संचालन में वहाँ के अनेक अध्यापकों का बहुत बड़ा योगदान है वे सब मिलकर संगठित होकर सेवा सदन को चला रहे हैं। उन्होंने कुशलगढ़ में ईसाई मिशनरी स्कूलों की गतिविधियों पर चिन्ता जताते हुए यह भी प्रस्ताव रखा कि आर्य समाज, दयानन्द सेवा सदन व आर्य प्रतिनिधि सभा इस क्षेत्र में एक गुरुकुल या वैदिक विचार वाला कोई बड़ा स्कूल स्थापित करें जिसमें विद्यार्थियों को शिक्षा देकर मिशनरी स्कूलों के प्रलोभन से स्थानीय लोगों को बचाया जा सके। कुशलगढ़ दयानन्द सेवा सदन की गतिविधियों को देखकर व सुनकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की गई। सभा ने भी आश्वस्त किया कि सभा आपके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़ी है तथा गुरूकुल खोलने का भी आश्वासन दिया। सभा के प्रतिनिधि मंडल को भावभीनी विदाई दी गई। 28 दिसम्बर 2019 को कुशलगढ़ से प्रातः बांसवाड़ा लौटे। बांसवाड़ा से जीववर्धन जी को साथ लेकर प्रतिनिधि मंडल प्रतापगढ़ आर्य समाज पहुँचा। वहाँ आर्य समाज की जमीन पर अवैध रूप से गेराज संचालन तथा स्कूल संचालन तथा उससे होने वाली आय व्यय पर चर्चा की गई, पर इस अवसर पर मंत्री के उपस्थित नहीं होने के कारण बात आगे बढ़ नहीं सकी। इससे पूर्व प्रतिनिधि मंडल दयानन्द सेवा सदन के संस्थापक स्वामी स्वतन्त्रतानन्द की स्मृति में स्थापित एक राजकीय विद्यालय का दौरा किया तथा पूर्व मंत्री श्री नन्दलाल मीणा जी से उनके घर गांव में जाकर मुलाकात की, प्रतिनिधि मंडल ने उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया तथा प्रतापगढ़ आर्य समाज की अव्यवस्थाओं की भी जानकारी दी गई। पूर्व मंत्री जी के परिवार ने प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया। प्रतापगढ़ से ही रात्रि को रवाना होकर प्रतिनिधि मंडल वापस आर्य समाज बारां के लिए रवाना हुए। साथ में कोटा से भी एक प्रतिनिधि मंडल साथ में शामिल हो गया।

बारां आर्य समाज पहुँचने पर वहाँ की भूमि व आर्य समाज मंदिर को देखकर मन प्रफुल्लित हुआ परन्तु वहाँ की अव्यवस्थाओं व गुटवाजी से सभा का प्रतिनिधि मंडल अप्रसन्न हुआ। भोजन करने के बाद प्रतिनिधि मंडल छबड़ा के लिए रखाना हो गये। छबड़ा से प्रतिनिधि मंडल प्रस्थान कर प्रातः 4:30 जयपुर पहुँचा।

**डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य**
**कोषाध्यक्ष**
**आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान**

## एक सौ अश्वशक्ति वाला रथ (वेद-स्वाध्याय)

**प्राता रथो नवो योजि सस्निश्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः।**
**दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत्।। ऋ० २। १८।१ ।।**

अर्थ – (मनुष्यः) मननशील शिल्पी जन (प्रातः) ब्राह्ममुहूर्त में उठकर (सः) जो (इष्टिभिः) सुसंगत, सुनियोजित (मतिभिः) बुद्धि चिन्तनों द्वारा (रंह्यो भूत्) चलाने योग्य होता है, ऐसे (नवो रथो योजि) नवीन रथ के निर्माण की योजना बनायें जो (सस्निः) सुख देने वाला हो, (चतुर्युगः) जिसे चार स्थानों में जोड़ा गया हो, (त्रिकशः) जिसमें चाबुक के समान तीव्र, मध्यम, मन्द गति से चलाने के तीन तन्त्र हों, (सप्तरश्मिः) जिसमें लगाम के सृदश आगे, पीछे, दाहिने, बांये, ऊपर, नीचे और स्थिर करने की यन्त्र प्रणाली और (दशारित्रः) दश रोकने, चलाने के तन्त्र (गियर) लगे हों, ऐसे (स्वर्षाः) सुखदायक रथ का निर्माण करें।

जिससे गमनागन किया जा सके, उसे रथ कहते हैं। उसकी रचना ऐसी होती है कि व्यक्ति सोता हुआ भी यात्रा कर सकता है। रथों का प्रयोग प्राचीन समय से ही युद्धों और आने जाने के लिये होता आया है, जिन्हें दो या अधिक घोड़े मिलकर खींचते थे।

ऋग्वेद के इस सूक्त में 1 –7 मंत्रों में क्रमशः दो से प्रारम्भ कर एक सौ घोड़ों द्वारा चलाये जाने वाले रथों का वर्णन आया है। साथ ही उसके कल पुर्जों की संख्या भी बतलाई है और यह भी कहा है कि शिल्पी जन प्रातःकाल अर्थात् ब्राह्ममुहूर्त में उठ योजना बनाकर इसका निर्माण करें। विचार करने पर यह सामान्य रथ न होकर दिव्य शक्ति से प्रेरित वाहन प्रतीत होता है। जैसे आजकल की मोटर गाड़िया हैं, कुछ ऐसा ही संकेत इस रथ के लिये किया गया है।

**प्राता रथो नवो योजि** प्रातःकाल नवीन रथ को सन्नद्ध अर्थात् गमन के लिए सज्जित किया जाये जो नवीनतम तन्त्र वाला हो और सस्निः सारी सुविधाओं से युक्त हो। जिसमें बैठकर विश्राम लिया जा सके। अब इस रथ के कल पुर्जों का वर्णन किया जाता है।

1. **चतुर्युगः** – जिसे चार स्थानों में जोड़ा गया हो। जैसे आजकल मोटरगाड़ी में इंजन, चार चक्र, ऊपर का ढांचा और शेष कल पुर्जे उसे

चलाने, गति नियन्त्रित करने या दिशा बदलने के लिये लगाये जाते हैं, ऐसा ही यह रथ चार महत्त्वपूर्ण अंगों से जुड़ा हुआ होता है।

2. त्रिकशः – कशा चाबुक को कहते हैं जिससे घोड़ों को हाँकते हैं। यहाँ त्रिकशः से अभिप्रायः मन्द, मध्यम, तीव्र वेग से रथ को चलाने वाली यन्त्र प्रणाली से है। जिसके द्वारा मनोनुकूल रथ की गति न्यून या अधिक की जा सके।

3. **सप्तरश्मिः** – सात लगामों वाला। लगाम द्वारा घोड़े को आगे पीछे, दाहिने, बायें घुमाया या मोड़ा जा सकता है। ऐसे ही दिव्य रथ को चारों दिशाओं, ऊपर नीचे और एक स्थान पर स्थिर किया जा सके ऐसे तन्त्र की योजना प्रतीत होती है।

4. **दशारित्रः** – दश गति को बढ़ाने वाले यन्त्र प्रकाश, ध्वनि, दाहिने, बायें, पीछे से दिखाने वाले शीशे वातानुकूलन, तापमान, तेल, पानी बताने वाले यन्त्रादि।

इसी सूक्त के दूसरे मंत्र में कहा है –

**सास्मा अंर प्रथमं स द्वितीयमुतो तृतीयं मनुषः स होता ।**
**अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा।। ऋ० २.१८.२।।**

जो रथ इस स्वामी के लिए बनाया है वह (प्रथमम्) पृथिवी में गमन (द्वितीयम्) जल में गमन (उतो) और (त्तीयम्) तीसरे अन्तरिक्ष को मिलाता है अर्थात् तीनों स्थानों में भ्रमण कर सकता है। यह रथ सुखदायक, विजय कराने वाला है। (वृषा) अत्यन्त बलयुक्त होता हुआ (अन्यस्याः गर्भम्) दूसरी गति का ग्रहण कर लेता है अर्थात् तीनों स्थानों में से जहाँ पर भी इसे चलाया जाये वहीं वैसी ही गति से चलता है। इस रथ को विद्वान् शिल्पी लोग परस्पर सम्मति कर बनायें। जिसमें **हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजम्** (ऋ० २.१८.३) हरण अर्थात् गति को बढ़ाने वाले और धारण, आकर्षण गुणों से युक्त तथा वायु और अग्नि से जिसे चलाया जा सके, ऐसे रथ में मेधावी जन भ्रमण करें।

आगे मन्त्र से छः तक दो घोड़ों, चार, छ, आठ, दश से लेकर एक सौ घोड़ों द्वारा चलाये जाने वाले रथ का वर्णन किया है। मन्त्र २.१८.५ के भावार्थ में स्वामी दयानन्द जी कहते हैं– जैसे बीस, तीस, चालीस, साठ, सत्तर बलवान् घोड़े एक साथ जोड़कर यान को शीघ्र चलाते हैं, उससे अधिक वेग से अग्नि आदि पदार्थ यान को ले जाते हैं। यहाँ एक सौ घोड़ों से अभिप्राय है एक सौ अश्वशक्ति (हार्स पावर) वाला इंजन इस वाहन में लगाया जाये जिससे जल, स्थल, गगन तीनों में अव्याहत गति से गमनागमन किया जा सके। यह सूक्त इस विद्या को जानने वाले को अन्वेषण करने योग्य है। अभी ऐसी कार का निर्माण तो हो चुका है जो भूमि पर दौड़ती हुई आकाश में भी फर्राटे भरने लगती है परन्तु तीनों स्थानों पर भ्रमण करने वाले वाहन का अभी आविष्कार नहीं हुआ है।

**डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती**

## ऋषि दयानन्द संसार के अद्वितीय महान् युगपुरुष

जीवात्मा एक अत्यन्त अल्प परिमाण वाली चेतन सत्ता है। यह अल्प ज्ञान एवं अल्प शक्ति से युक्त होती है। इसका स्वभाव व प्रवृत्ति जन्म व मरण को प्राप्त होना है। जीवात्मा में मनुष्य व अन्य प्राणी–योनियों में जन्म लेकर कर्म करने की सामर्थ्य होता है। मनुष्य योनि में जन्म का कारण इसके पूर्वजन्म व जन्मों के वह कर्म होते हैं जिनका भोग करना शेष रहता है। ईश्वर जीवात्मा को इसके पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार जन्म व जाति–आयु–भोग प्रदान करता है। सभी जीवात्मायें एक ही प्रकार की हैं। इनमें सत्तात्मक दृष्टि से कोई भेद नहीं है। सभी जीवात्मायें अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, अविनाशी, एकदेशी, ससीम तथा जन्म–मरण धर्मा हैं। सभी जीवात्माओं को अनन्त बार अनेक वा सभी योनियों में जन्म व मृत्यु प्राप्त हो चुकी है। सभी जीवात्मायें कई–कई बार मोक्ष में भी आती जाती रही हैं। जीवात्मा के जब पाप व पुण्य कर्म बराबर होते हैं अथवा पाप कम तथा पुण्य अधिक होते हैं, तब परमात्मा उन्हें मनुष्य योनि में जन्म देते हैं। शुभ कर्मों की जितनी अधिकता और पाप कर्मों की जितनी न्यूनता होगी उतना ही जीवात्मा को मनुष्य योनि में उत्तम, मध्यम या साधारण कोटि में जन्म मिलेगा। परमात्मा जीवात्मा के कर्मों की अपेक्षा से त्रिकालदर्शी है। वह जीवात्मा के कर्म संग्रह व प्रारब्ध के अनुसार जीवात्मा को जन्म देता है। जीवात्मा जन्म लेकर अपनी पूर्व अर्जित ज्ञान व कर्म सम्पदा को बढ़ाता व अपने कर्मों से न्यून भी करता है।

ऋषि दयानन्द के जीवन पर विचार करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि उन्होंने गुजरात प्राप्त में मोरवी राज्य के टंकारा नाम ग्राम में एक निष्ठावान् पौराणिक ब्राह्मण पं. करसनजी तिवारी के यहाँ जन्म लेकर अपने पूर्व संस्कारों व प्रारब्ध के अनुसार अपने ज्ञान व सद्कर्मों में अपूर्व वृद्धि की थी। उनके जैसा सत्यान्वेषी एवं ईश्वर को तर्क तुला पर तोल कर मानने वाला दूसरा कोई महापुरुष उनसे पूर्व व पश्चात् उत्पन्न नहीं हुआ। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर को विद्वानों के उपदेश, शास्त्रीय अध्ययन व योग विधि से जानकर और समाधि अवस्था उसका साक्षात्कार किया था। उन्होंने ईश्वर विषयक अपने ज्ञान एवं साक्षात्कार के अनुभवों का लाभ केवल अपने मोक्ष प्राप्ति तक सीमित नहीं रखा अपितु उसे मनुष्य मात्र के हित, सुख व कल्याण के लिए प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द ने अपने ज्ञान व अनुभव का लाभ समस्त मानव जाति को प्रदान करने के लिये अपना सारा जीवन सत्य ज्ञान के प्रचार, अविद्या निवारण, देश को स्वतन्त्र कराने की प्रेरणा करने और उसके उपाय सुझाने, समाज में व्याप्त अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित मिथ्या परम्पराओं का सुधार करने तथा महाभारत काल के बाद सन्ध्या व देवयज्ञ आदि विस्मृत वेद विहित अनुष्ठानों का प्रचार करने आदि कार्यों में व्यतीत किया। मनुष्य जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं है जिस पर उन्होंने विचार न किया हो और वेद प्रमाण, तर्क एवं युक्ति के आधार पर चिन्तन–मनन व विश्लेषण कर उसका समाधान न किया हो। न केवल देश के अपितु विश्व के लोगों ने अपने–अपने मतों के पक्षपात के कारण उनके कार्यों के महत्व को समझने का प्रयास नहीं किया। ऋषि दयानन्द ने सत्योपदेश व वेदप्रचार के परिणामों को ध्यान में न रखकर मनुष्य मात्र के हित, कल्याण तथा देशहित को अपनी दृष्टि में रखकर निष्पक्ष एवं उदारता का परिचय देते हुए सबको सन्मार्ग बताया। उनका दिया हुआ वैदिक जीवन दर्शन पूर्ण मानव जाति के जीवन के लिये उपादेय जीवन–दर्शन है जिसे अपनाकर मनुष्य लोक व परलोक में उन्नति, सुख प्राप्ति तथा दुःखों से सर्वथा मुक्त होकर मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी बन सकता है। उन जैसा जीवन महाभारत युद्ध के बाद किसी महापुरुष का जीवन दृष्टिगोचर नहीं होता। ऋषि दयानन्द सद्कर्मों वा सदाचरण सहित सद्ज्ञान से युक्त होने के कारण धन्य थे और उन्होंने हमें भी सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं वेदभाष्य आदि अनेक ग्रन्थ देकर हमारा ज्ञानवर्धन किया जिससे हम धन्य हुए हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपनी आयु के 21 वर्ष पूर्ण कर ईश्वर के सच्चे स्वरूप की प्राप्ति एवं मृत्यु पर विजय पाने अर्थात् जन्म व मरण से



**इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88।।**

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

अवकाश प्राप्त करने के साधनों का ज्ञान प्राप्त करने के लिय अपने पिता का गृह त्यागा था। वह देश के समस्त धार्मिक व तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक व सामाजिक विद्वानों से मिले थे और उनसे ईश्वर के सत्य स्वरूप एवं मृत्यु पर विजय के उपायों पर चर्चायें की थी। उन्हें योग विद्या के योग्य गुरु भी मिले थे जिनसे प्रशिक्षण प्राप्त कर वह योग के सफल अभ्यासी व सिद्ध पुरुष बने थे। उनके आचरणों व व्यवहारों से अनुभव होता है कि लगभग 35 वर्ष की आयु होने पर सन् 1860 में वह दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती जी के निकट मथुरा में अध्यनार्थ उपस्थित होने से पूर्व उनको ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान व साक्षात्कार हो चुका था। गुरु विरजानन्द सरस्वती जी से उन्होंने वेदागों मुख्यतः शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि का अध्ययन किया था। वेद विषयक सभी प्रकार की आवश्यक चर्चायें भी उन्होंने गुरुवर से अवश्य की होंगी। इन सब कारणों से ही गुरुजी का दयानन्द जी के प्रति असीम स्नेह व प्रेम था। वह दयानन्द जी के वेदागों के ज्ञान सहित योग में उनकी उपलब्धियों से भी परिचित थे और उन्होंने अनुभव किया था कि उनका शिष्य दयानन्द संसार में व्याप्त वा प्रचलित अविद्या को दूर कर वेद विद्या का प्रकाश कर सकता है जैसे ज्ञान का प्रकाश वैदिक युग में मुख्यतः आर्यावर्त वा भारत में था।

ऋषि दयानन्द ने इस कार्य को अपने जीवन का एक–एक क्षण व पल का उपयोग करते हुए किया भी। विद्या पूरी करने के बाद गुरु की प्रेरणा से उन्होंने विद्या के पर्याय चार वेदों का प्रचार करने का निश्चय किया। उन्होंने इसके लिये वेदों को प्राप्त कर उनका गहन अध्ययन व मनन किया था। उस समय का समाज वेद विरुद्ध मान्यताओं मूर्तिपूजा, फलित–ज्योतिष, ईश्वर के अवतार की मान्यता, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, बाल व युवा विधवाओं की दयनीय दशा, समाज में जन्मना जातिवाद की वेद विरुद्ध अनेक प्रथाओं से ग्रस्त था। ऋषि दयानन्द जी वेद–विद्या के प्रचार प्रसार, असत्य के खण्डन तथा सत्य के मण्डल के महत्व से भली भांति परिचित हो चुके थे। अतः उन्होंने समाज सुधार का डिण्डिम घोष किया था। उन्होंने राम व कृष्ण आदि अवतार मानने व उनकी मूर्तियों को मन्दिरों व घरों में स्थापित कर उनकी पूजा करने का निषेध व खण्डन वेद प्रमाणों, तर्कों व युक्तियों से किया। पूरे देश में कोई विद्वान ऐसा नहीं था जो उनके किसी तर्क व युक्ति का खण्डन व समाधान कर सके। उस समय के निष्पक्ष एवं विवेक बुद्धि रखने वाले सभ्य पुरुषों को ऋषि दयानन्द की बातें उचित प्रतीत हुईं थी। ऋषि दयानन्द जी की सभाओं में बड़ी संख्या में लोग आते थे और उनसे वैदिक मत की दीक्षा लेते व उनके ग्रन्थों को प्राप्त कर उनका स्वाध्याय कर उनके अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करते थे। इस कारण से अनेक लोगों के आर्थिक स्वार्थों को हानि पहुंच रही थी। वह सब मत–मतान्तर वाले लोग एक जुट होकर उनका विरोध करने लगे। किसी ने भी उनकी बात को समझने का प्रयत्न नहीं किया। एकान्त में वह सब अपने अपने मतों की निरर्थकता को जानते व बताते थे। सत्य को स्वीकार करने व स्वार्थों को छोड़ने का सामर्थ्य अधिकांश लोगों में नहीं था। ऐसा होने पर भी उस समय के अनेक पौराणिक विद्वानों सहित अन्य मतों के भी कुछ लोग वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं से प्रभावित होकर वेद मत की शरण में आयें और उन्होंने ऋषि दयानन्द के प्रति अपनी सद्भावनायें व्यक्त की। इस प्रकार ऋषि दयानन्द के द्वारा भारत में धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों, परम्पराओं व कुरीतियों पर प्रहार हुआ जिसकी गूंज विश्व के अनेक देशों में पहुंचीं और देश विदेश के अनेक विद्वानों ने ऋषि दयानन्द के प्रति सहानुभूति एवं उनके विचारों के प्रति सहमति भी व्यक्त की।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में सत्य का अनुसंधान कर ईश्वर के सच्चे स्वरूप का पता लगाया, ईश्वर के प्रति मनुष्यमात्र के कर्तव्यों को जाना और उनका सर्वत्र प्रचार किया। ऋषि दयानन्द का ज्ञान वेद प्रमाणों से युक्त होने सहित तर्क व युक्तियों पर आधारित था। ऋषि दयानन्द का कार्य अभूतपूर्व कार्य था। ईश्वर के जिस सत्यस्वरूप तथा उपासना पद्धति का ऋषि दयानन्द ने प्रचार–प्रसार किया उस स्वरूप से उनके समय के विश्व का जनसमुदाय सर्वथा अनभिज्ञ था। स्वाध्याय न करने व सत्यस्वरूप के ज्ञान के प्रति इच्छा के अभाव के कारण विश्व के अधिकांश लोग आज भी अविद्या से युक्त हैं और मिथ्या बातों को ही मानते हैं। ऋषि दयानन्द के समय में ईश्वर के सत्यस्वरूप से भिन्न, अवैदिक व अज्ञानता से युक्त ईश्वर के अनेक गुणों आदि की स्तुति व उपासना प्रचलित थी। ऋषि दयानन्द के सभी सिद्धान्त तर्क, युक्ति व सृष्टिक्रम के सर्वथा अनुकूल हैं। अन्य मतों में ऐसा नहीं है। ऋषि दयानन्द ने धार्मिक एवं सामाजिक अन्धविश्वासों व परम्पराओं का भी पूरी सामर्थ्य से विरोध किया। इसके लिए उन्होंने अपने प्राणों को भी जोखिम में डाला। अनेक बार उनके विरोधियों ने उनकी हत्या करने के षडयन्त्र रचे तथापि ऋषि दयानन्द ने इनकी चिन्ता न कर मानवमात्र के हितकारी कार्यों को प्रभावित नहीं होने दिया और इनको पूरे उत्साह एवं पुरुषार्थ से करते रहे। अन्ततः वह कुछ ताकतों के षडयन्त्रों का शिकार होकर बलिदान को प्राप्त हो गये। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सरकार व सभी मत–मतान्तर उनके विरोधी थे। ऋषि दयानन्द की विचारधारा ने सबका आधार कमजोर किया था। वह एक प्रकार से ज्ञान विज्ञान के सम्मुख अप्रासंगिक से हो गये थे। सत्य को स्वीकार करने का साहस किसी में नहीं था। कोई मत व विद्वान् अपने मत की मान्यताओं को लेकर उनके पास चर्चा व शास्त्रार्थ करने नहीं आता था। यदि कोई आया भी तो ऐसा अपवादरूप में ही हुआ। अपनी मृत्यु से पूर्व ऋषि दयानन्द अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर गये। उनके सिद्धान्तों के अनुरूप जीवन पद्धति को अपनाकर ही मनुष्य श्रेष्ठ व आदर्श वैदिक जीवन व्यतीत करते हुए मोक्ष को प्राप्त होकर जन्म–मरण के बन्धों से छूट कर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त हो सकता है।

ऋषि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। उनके प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला, भ्रान्तिनिवारण आदि हैं। वेदभाष्य के रूप में ऋग्वेद (आंशिक) एवं यजुर्वेद पर सम्पूर्ण संस्कृत–हिन्दी भाष्य कर उन्होंने प्रभूत ज्ञानराशि विश्व के लोगों को प्रदान की है। उनके जीवन चरित भी अत्यन्त शिक्षाप्रद हैं। उनके उपदेशों का संग्रह उपदेश–मंजरी, शास्त्रार्थ एवं प्रवचनों के संग्रह, उनकी आत्मकथा, उनका पत्रव्यवहार आदि भी मनुष्य जाति की अनमोल निधियाँ व ज्ञान के भण्डार हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में देश में विदेशी अंग्रेजी सरकार के होते हुए तथा सन् 1857 में देशभक्तों का निर्दयता से संहार करने पर भी अपनी आवाज को दबाया नहीं। सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने देश की आजादी का खुलकर स्पष्ट शब्दों में बिगुल बजाया है। कुछ विद्वान् सत्यार्थप्रकाश के इन्हीं शब्दों को उनकी मृत्यु का कारण मानते हैं। सम्पूर्ण वेद ही देश को आजाद कराने की प्रेरणा करता है। वेद का अध्ययन करने वाला मनुष्य न केवल अपने देश को स्वतन्त्र देखना चाहता है अपितु वह चाहता है कि सर्वोत्तम गुणों व व्यवहारों से युक्त वेद की शिक्षाओं के अनुसार शासन ही सम्पूर्ण विश्व में स्थापित हो। वेद में परमात्मा ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' कह कर ऐसा ही वैदिक राष्ट्र व वैदिक विश्व बनाने की प्रेरणा भी की है। एक अनुमान के अनुसार ऋषि दयानन्द के समय व आजादी तक के सभी ऋषिभक्त, वेदानुयायी एवं आर्यसमाजी लगभग शत–प्रतिशत देश को आजाद कराने की भावनाओं से युक्त थे और उन्होंने किसी न किसी रूप में देश की आजादी में अपना योगदान दिया था। क्रान्तिकारियों के आद्य आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा भी ऋषि दयानन्द के साक्षात् शिष्य रहे। ऋषि की

प्रेरणा से उन्होंने इंग्लैण्ड जाकर संस्कृत का अध्यापन किया था।

ऋषि दयानन्द के समय में देश अज्ञान व अशिक्षा से भरा हुआ था। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा व ज्ञान के महत्व का प्रकाश व प्रचार किया। उन्होंने संस्कृत अध्ययन के लिये कुछ पाठशालायें भी खोली थीं। उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में वर्णित गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को साकार रूप दिया एवं एक विश्व विख्यात गुरुकुल को हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में स्थापित किया था जिसने महाभारत यद्ध के कुछ बाद अवरुद्ध वैदिक विद्वानों की परम्परा को पुनः प्रचलित किया। इस गुरुकुल से समय–समय पर अनेक वेदों के शीर्ष विद्वान् प्राप्त हुए। हिन्दी पत्रकारिता एवं हिन्दी व संस्कृत के अध्यापन में भी गुरुकुल से योग्य स्नातक व आचार्य प्राप्त हुए। स्वामी श्रद्धानन्द जी और स्वामी दर्शनानन्द जी ने देश के अनेक भागों में अनेक गुरुकुल खोले। यह गुरुकुलीय आन्दोलन समय के साथ लोकप्रिय हुआ और देश में बालक बालिकाओं के पृथक–2 अनेक गुरुकुल स्थापित हुए जो आज भी सैकड़ों की संख्या में देश भर में चल रहे हैं। हमारे पौराणिक विद्वान् स्त्रियों को वेदों के अध्ययन, मन्त्रपाठ व वेदमन्त्र सुनने तक का अधिकार नहीं देते थे। ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों व शूद्रों को वेदाधिकार दिया। उनकी ही कृपा से आर्यसमाज के गुरुकुलों से अनेक वेद विदुषी देवियाँ यथा आचार्या डा. प्रज्ञा देवी, डा. सूर्यादेवी, डा. नन्दिता शास्त्री, डा. सुमेधा, डा. सुकामा, डा. प्रियम्वदा, डा. अन्नपूर्णा, डा. धारणा आदि प्राप्त हुईं हैं जिन्होंने स्वयं गुरुकुल संचालित कर सहस्रों कन्याओं को वैदिक धर्म की प्रचारक विदुषी वैदिक नारी बनाया है। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद संयुक्त पंजाब की आर्यसमाजों ने उनकी स्मृति में डी.ए.वी. स्कूल एवं कालेजों का देश–विदेश में संचालन किया। इन स्कूल कालेजों से अब तक करोड़ों युवक युवतियों ने शिक्षा प्राप्त की व अब भी कर रहे हैं जिससे देश से अज्ञान का अन्धकार दूर होकर आध्यात्मिक एवं भौतिक ज्ञान में वृद्धि हुई है। आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर सनातन धर्म सभाओं आदि अनेक संस्थाओं ने विद्यालयों का संचालन किया। वर्तमान में शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है। अब शिक्षा का पहला जैसा स्तर भी नहीं रहा। राजनेताओं को सत्ता चाहिये। शिक्षा के स्तर को लेकर उनको कभी गम्भीर नहीं देखा गया। आज अनेक शिक्षण संस्थायें ऐसी हैं जहाँ देश का अरबों रुपया व्यय होता है और यहाँ देशभक्त लोग नहीं अपितु देश विरोधी युवक युवतियां तैयार होते हैं। ऋषि दयानन्द के समय से ही आर्यसमाज ने शिक्षा जगत् में देश व धर्म को महत्व देने वाली तथा चरित्रवान युवक व युवतियों का निर्माण करने वाली शिक्षा का प्रचार किया है। इन सबका प्रमुख श्रेय आर्यसमाज व उसके संस्थापक ऋषि दयानन्द को जाता है।

ऋषि दयानन्द के समय में वेद विलुप्त हो चुके हैं। वेद के मन्त्रों का सत्य व यथार्थ अर्थ करने की योग्यता विद्वानों में नहीं थी। काशी विद्या की नगरी थी। यहाँ कहीं वेदों का अध्ययन–अध्यापन होता था, इसकी जानकारी नहीं मिलती। वेद ही लुप्त थे तो वेदों का अध्ययन कैसे व क्योंकर होता? काशी के अतिरिक्त देश के अन्य क्षेत्रों में तो वेदाध्ययन होना सम्भव ही प्रतीत नहीं होता। ऋषि दयानन्द ने विलुप्त वेदों का उद्धार किया। उन्होंने वेदों के सत्य,यथार्थ एवं व्यवहारिक अर्थों को प्रकाशित एवं प्रचारित भी किया। इंग्लैण्ड निवासी जर्मन विद्वान् प्रो. मैक्समूलर तक ने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की प्रशंसा की है। ऋषि के इस ग्रन्थ को पढ़कर मैक्समूलर के विचारों में भी परिवर्तन हुआ। मैक्समूलर यहाँ तक प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा कि वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋग्वेद से होता है और उसकी समाप्ति ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर होता है। मैक्समूलर महोदय ऋषि से प्रभावित थे। वह ऋषि दयानन्द का जीवन चरित लिखना चाहते थे परन्तु उनके प्रस्ताव का ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा ने उत्तर नहीं दिया था। ऋषि दयानन्द की कृपा से आज वेदों की पूर्ण प्रामाणिक वेद संहितायें एवं वेदों पर ऋषि दयानन्द एवं उनके अनुयायी अनेक विद्वानों के आंशिक एवं सम्पूर्ण भाष्य उपलब्ध हैं। ऋषि दयानन्द द्वारा वेदों के उद्धार के महत्व का अनुमान तो वेदों की परम्परा से जुड़े विद्वान ही लगा सकते हैं। ऋषि दयानन्द के वेदप्रचार से भारत के नगरों व ग्रामों में रहने वाले हिन्दुओं सहित पर्वतों व वनों आदि सुदूर स्थानों पर रहने वाले आदिवासी हिन्दुओं का ईसाई व इस्लाम मत में छल, बल व लोभ से किया जाने वाला परिवर्तन एवं धर्मान्तरण भी कम हुआ। आज यह फिर तेजी से सिर उठा रहा है और भीतर ही भीतर अनेक प्रकार से इसे अंजाम दिया जा रहा है। हिन्दू समाज के शिक्षित लोग इसकी उपेक्षा कर रहे हैं। देश का सौभाग्य है कि आज केन्द्र में श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है जिनके समय में हिन्दुओं व आर्यों की उपेक्षा होनी कुछ कम हुई है। आर्यसमाज व हिन्दू समाज पर दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट दीखता है कि यह आज भी भावी संकटों व समस्याओं से बेखबर व उदासीन हैं। आर्यसमाज का संगठन क्षीण प्रायः है। यदि आर्यसमाज संगठित नहीं हुआ, हिन्दू समाज और आर्यसमाज में देश की समस्याओं मुख्यतः धर्मान्तरण व जनसंख्या वृद्धि रोकने पर परस्पर सार्थक सहयोग नहीं हुआ तो यह आर्य हिन्दू जाति के लिए अत्यन्त दुःखद अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर सकता है। किसी सेकूलर दल की हिन्दू जाति के पराभव को रोकने में किंचित् भी रुचि नहीं है। ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद उत्पन्न हुए महापुरुषों में अद्वितीय व सर्वतोमहान् महापुरुष थे। उनके कारण हिन्दू जाति की रक्षा हुई है। उनके बताये मार्ग पर चलकर ही हिन्दू आर्य जाति भविष्य में भी रक्षित रह सकती है। प्रश्न है कि क्या यह ऋषि दयानन्द के संगठन एवं शुद्धि के विचारों को अपनाती है अथवा नहीं? ओ३म् शम्।

**–मनमोहन कुमार आर्य**

## शिक्षाविद् श्री रामनारायण जी स्वामी को 80 वें जन्मदिवस पर 108 कुण्डीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री रामनारायण जी स्वामी पूर्वजन्मों के अच्छे के कार्यों के फलस्वरूप बाल्यकाल से ही विद्यानुरागी रहे, आपके अन्दर का विद्यार्थी और शिक्षक इस 80 वर्ष की उम्र में भी वर्तमान है। जब आप आचार्यों के सम्मुख होते हैं तो एक विनम्र विद्यार्थी की तरह सीखने की इच्छा रखते हैं तो दूसरी ओर बालकों को राष्ट्र निर्माण में सहायक बनाने हेतु प्रयत्नशील रहते हैं। मानव अपनी दुर्बलतावश स्वं को आगे अकेले चलने में अपनी प्रगति समझता है एवं सबको साथ लेकर चलने में अपनी हानि समझता है, किन्तु श्री रामनारायण जी साधारण सोच से ऊपर उठे हुए व्यक्तित्व हैं। विवाह के पश्चात् अपनी धर्मपरायण पत्नि स्मृतिशेष कौशल्या देवी ''याज्ञिकी'' को पढ़ाया साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया। जब आर्य समाज के सम्पर्क में आए तब अपने पूरे परिवार को वैदिक सिद्धान्तों से जोड़ने का प्रयास किया, तदनुसार सफलता भी प्राप्त हुई आपके सुपुत्र श्रीयुत् सुभाष जी स्वामी, पुत्रवधू श्रीमती निधि स्वामी एवं पुत्रियाँ श्रीमती नर्वदा देवी एवं श्रीमती सीमा आर्या वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान् हैं। इतना ही, नहीं आपने अपने विद्यालयों (राष्ट्रीय सहायक विद्यालय) में वैदिक संस्कारों से दीक्षित करने हेतु नियमित वैदिक प्रार्थना ही यज्ञ का कार्यक्रम चलाया हुआ है एवं साथ साथ वैदिक विद्वानों के व्याख्यान भी विद्यार्थियों के बीच कराते रहते हैं। सन्ध्या, यज्ञ एवं स्वाध्याय आपकी दिनचर्या के अभिन्न अंग हैं। वानप्रस्थ आश्रम के कर्तव्यों का पालन आप पूरी श्रद्धा एवं लगन से करते हैं।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 RNI No. 10471/60

जीवन यात्रा के 80 वसन्त आपने यज्ञीय भावना से युक्त रहते हुए सफलतापूर्वक पूर्ण किए हैं। इसी सफलता की अभिव्यक्ति स्वरुप पर्यावरण पोषण यज्ञ समिति बीकानेर की ओर से 8 व 9 नवम्बर को पाणिग्रहण समारोह स्थल बीकानेर में 108 कुंडीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। यजमानों की संख्या बढ़ने पर लगभग 10 कुंड और लगाने पड़े। प्रत्येक कुंड पर 8 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था थी। 2 दिनों में दो दो घण्टों के कुल 4 सत्रों में प्रशिक्षण दिया गया। कड़ी ठंड होने पर भी इनमें प्रायः 600 से 800 व्यक्ति हर सत्र में उपस्थित होते रहे।

श्री रामनारायण जी स्वामी के 80वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस शिविर में आचार्य सत्यजित् जी रोजड़ गुजरात, आचार्य रविशंकर जी बयाना राजस्थान, आचार्य रामदयाल जी मधुबनी बिहार, डॉ अर्चना जी रोजड़ गुजरात ने प्रशिक्षण दिया। श्री कंचन कुमार जी के मधुर भजन हुए। लगभग 90 परिवारों ने यज्ञ करने का संकल्प लिया। मुख्य आयोजन प्रबंधन श्री सुभाष जी स्वामी ने कुशलता से किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्यवीर दल राजस्थान शिक्षाविद् श्री रामनारायण जी स्वामी के 80 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की कामना करते हुए हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हैं।

**आचार्य रविशंकर आर्य**
**उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान**
**सहसंचालक, आर्यवीर दल राजस्थान**

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक देवेन्द्र कुमार, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

**प्रेषकः- सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान**
**हनुमान ढाबे के पास , राजा पार्क, जयपुर-302004**

**खाता धारक का नाम : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान**
**यूको बैंकA/c No.:18830100010430 , जयपुर**
**IFSC - UCBA 0001883**

**प्रेषित**



विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।